टिचेनर का संरचनात्मक मनोविज्ञान: मुख्य विशेषताएँ- II
(TITCHENER'S STRUCTURAL PSYCHOLOGY: MAIN FEATURES- II)

Scanned with CamScanner

- संरचनात्मक मनोविज्ञान की मुख्य विशेषताएँ निम्नांकित हैं---
- मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (Subject matter of Psychology)
- मनोविज्ञान की विधियाँ (Methods of Psychology)
- चयन के नियम (Principles of Selection)
- संबंध के नियम (Principles of Connection)
- संवेग (Emotion)
- चिन्तन (Thinking)
- मन-शरीर समस्या (Mind- Body Problem)

Scanned with CamScanner

संबंध के नियम (PRINCIPLE OF CONNECTION)-

संबंध के नियम (PRINCIPLE OF CONNECTION)-

- यद्‌पि यह सही है कि टिचेनर ने साहचर्य या संबंध के नियम को संरचनावाद में अधिक महत्त्व नहीं दिय। है, फिर भी उन्होंने सामीप्यता के नियम (law of contiguity) को संवेदनों एवं प्रतिमाओं के साहचर्य (association) के लिए महत्त्वपूर्ण माना है। टिचेनर ने भाव को अनुभूति का स्वतंत्र तत्त्व नहीं माना| उन्होंने यह स्पष्टतः कहा कि जब भी चेतन अनुभूति में संवेदी या प्रतिमारूपी तत्त्व उत्पन्न होते हैं, तो साथ- ही-साथ वे सभी संवेदी प्रतिमारूपी तत्त्व भी उपस्थित हो जाते हैं जो उस संवेदी या प्रतिमारूपी तत्त्व के सामीप्य रह चुके हैं।

Scanned with CamScanner

- इस तरह से टिचेनर के लिए सामीप्यता का नियम साहचर्य का एक मौलिक नियम है। टिचेनर ने यह भी स्पष्ट किया कि चेतन के जो भिन्न-भिन्न तत्त्व होते हैं, वे आपस में अशंछादित (overlap) रहते हैं तथा एक-दूसरे को परिवर्तित भी करते है जिसका परिणाम यह होता है कि उनके संश्लेषण (synthesis) में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है।

Scanned with CamScanner

- इस तरह टिचेनर वुण्ट के समान एक स्थैतिक तत्त्वादी (static elementalist) नहीं थे। वुण्ट के अनुसार चेतन अनुभूति के तत्त्व स्थैतिक होते हैं और भौतिक वस्तुओं का गुण उनमें पाया जाता है । परन्तु टिचेनर उसे नहीं मानते थे और संश्लेषण के नियम को काफी महत्त्व दिया। संबंध के नियम के सहारे टिचेनर ने अर्थ की समस्या की व्याख्या करने का सफल प्रयास किया है। 1915 में टिचेनर अर्थ का सन्दर्भ सिद्धान्त ' (context theory of meaning) का प्रतिपादन किया। टिचेनर के इस सिद्धान्त अनुसार संवेदन का अर्थ उस संदर्भ द्वारा निर्धारित होता है जिसमें वह चेतन में उत्पन्न होता है।

Scanned with CamScanner

संवेग (EMOTION)-

- टिचेनर के लिए संवेग से तात्पर्य शरीर के भीतर संवेदन से उत्पन्न तीव्र भावों से होता है। इसलिए चेतन अनुभूति का भाव (feeling) ही संवेग का महत्त्वपूर्ण सारभाग होता हैं। टिचेनर ने संवेग के अध्ययन के लिए दो विधियों का प्रतिपादन किया है - प्रभाव की विधि (method of impression) तथा अभिव्यक्ति की विधि (method of expression) |

Scanned with CamScanner

- जब हम विभिन्न भावात्मक गुणों या विशेषताओं की तुलना करना चाहते हैं, तो प्रभाव की विधि का उपयोग करते हैं, जैसे- विभिन्न रंगों की भावात्मक विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए तुलना करने के ख्याल से उसे सुखद से दुःखद के क्रम में सुव्यवस्थित कर सकते हैं। अभिव्यक्ति विधि में शारीरिक क्रियाओं, जैसे-सांस लेना, रक्तचाप, हृदय गति, मनोगैल्वनी त्वक् अनुक्रिया (PGR) आदि के आधार पर संवेग का अध्ययन किया जाता है।

Scanned with CamScanner

चिन्तन (THINKING)-

- टिचेनर द्वारा चिन्तन के क्षेत्र में जो कार्य किये गए हैं, वे मूलतः उर्जवर्ग स्कूल द्वारा चिन्तन पर किये गये कार्यों की आलोचना के रूप में है। उर्जवर्ग स्कूल ने अपने शोधों के आधार पर यह स्पष्ट किया था कि चिन्तन में प्रतिमा नहीं होती है । अतः चिन्तन प्रतिमारहित (imageless) होता है।

Scanned with CamScanner

- टिचेनर ने इसका विरोध किया और कहा कि चिन्तन में संवेदी एवं प्रतिमाओं जैसे तत्त्व पाये जाते हैं। टिचेनर के प्रयोज्यों ने अपने चिन्तन प्रक्रिया में प्रतिमारहित अंतर्वस्तु (Imageless content) की संपुष्टि नहीं की । उर्जवर्ग स्कूल का यह विचार उन्हें मान्य था कि चिन्तन का स्वरूप unconscious होता है।

Scanned with CamScanner

मन-शरीर समस्या (MIND- BODY PROBLEM)-

- टिचेनर ने मनोभौतिकी समानान्तरवाद की संपुष्टि की । वुण्ट के समान ही उनका मत था कि मन या मानसिक क्रियाएँ, शरीर या शारीरिक क्रियाएँ से भिन्न होती है। इन दोनों के बीच किसी प्रकार की कोई अन्तःक्रिया नहीं होती है तथा इनमें से कोई किसी को प्रभावित नहीं करता है। लेकिन किसी एक में परिवर्तन होने पर दूसरे में परिवर्तन होता है।

Scanned with CamScanner

- इस प्रकार से इतिहासकारों ने टिचेनर को वुण्ट के ही समान एक मनोभौतिकी समानान्तरवादी माना है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि टिचेनर का संरचनावाद वुण्ट की तुलना में अधिक स्पष्ट एवं रूप से परिभाषित था। यह लगभग प्रत्येक दृष्टिकोण से आत्मपूरित था। इस संरचनावाद की मुख्य विशेषता यह है कि यह मनोविज्ञान के क्या, कैसे तथा क्यों पहलुओं पर विशेष रूप से बल डालता है।

Scanned with CamScanner